आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अधिगम, मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

अधिगम, मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन और आत्मविश्वास मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की महत्वपूर्ण अवधारणाऐं तथा क्षेत्र है। सामान्य रूप से विद्यार्थियों में इन सभी की सकारात्मकता, नकारात्मकता अथवा इनकी उच्चता और निम्नता उसके व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करती है। आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में इसकी उच्चता व निम्नता का सामाजिक संबंधों, नेतृत्व, विश्वास करने के परिप्रेक्ष्य में एक पारिवारिक अथवा सहपाठी का प्यार, सम्मान और दायित्व के अंतर्सबंध के रूप में परिभाषित किया जाता है। आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को पारिवारिक सदस्यों के उस स्नेह, सम्मान, समर्थन का अभाव रहता है जो गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को प्राप्त होता है। पारिवारिक वातावरण और आवासीय विद्यालयों के वातावरण विद्यार्थियों में सीखने समझने की क्षमता, उनकी मानसिक स्थिति, समायोजन की क्षमता और आत्मविश्वास को किस स्तर तक प्रभावित करते है इसी के संदर्भ में प्रस्तुत शोध केन्द्रित है।

समायोजन

समायोजन एक निरंतर चलने वाली वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने वातावरण से संघर्ष करके उसके अनुरूप ढालती है। किसी भी प्राणी का स्वयं को अपने वातावरण के अनुकूल बनाना ही समायोजन कहलाता है। वे सभी संस्थाऐं विशेष रूप से परिवार और विद्यालय जो कि विद्यार्थियों के विकास से संबंधित है उन्हें विद्यार्थियों के उन पक्षों के विषय में

विशेष रूप से जागरूक होना चाहिए जो उन महत्वपूर्ण कारकों को प्रदर्शित करते है जो कि किसी विद्यार्थी की सफलता को संतुष्ट व प्रभावित करते है।

कोई भी प्राणी जन्म से समायोजित अथवा कुसमायोजित नहीं होता है, प्राणी की शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक योग्यताऐं उस वातावरण से अत्यधिक प्रभावित होती है जिसमें वह स्वयं को पाता है। वह उस वातावरण में धीरे धीरे समायोजित अथवा कुसमायोजित होता है। समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों में सामंजस्य अथवा संतुलन बनाने का प्रयत्न करता है।[1]

प्याले ने समायोजन प्रक्रिया का विभिन प्रकार से अध्ययन किया इसमें उन्होंने बताया कि समायोजन की प्रक्रिया में स्वयं को या वातावरण को बदलने के लिए आत्मसातकरण एवं व्यवस्थापन पदों का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक वातावरण में तीव्र परिवर्तनों के बाद भी एक व्यक्ति अपने मूल्यों व व्यवहार में परिवर्तन नहीं करता। इस विशेषता को आत्मसातकरण कहा जाता है। इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति अपने मूल्य मानक सामाजिक संदर्भों से ग्रहण करके मूल्यों में परिवर्तन, सामाजिक मूल्यों के बदलने के साथ करता है तो उसे व्यवस्थापक कहा जाता है। एक व्यक्ति को समाज में समायोजित होने के लिए दोनों स्थितियों का प्रयोग करना होता है।[2]

समायोजन के प्रकार

रचनात्मक समायोजन – जब कोई व्यक्ति रचनात्मक क्षेत्र में समायोजन करता है तो यह समायोजन रचनात्मक कहलाता है।

---

[1] रघुनाथन, सेल्फ कॉन्फिडेन्स रिट्रीव्ड ऑन, 12 अगस्त, 2009

[2] प्याले, आरिजिन ऑफ इंटेलीजेंस इन स्टूडेंट्स, न्यूयार्क, नोरटोन, 1963

स्थानापन्न समायोजन – जब कोई व्यकित किसी एक क्षेत्र में असफल होने पर अपनी असफलता या असमायोजन का प्रत्यारोप दूसरे व्यक्तियों पर करता है तो यह समायोजन स्थानापन्न समायोजन कहलाता है।

मानसिक समायोजन – जब कोई व्यकित अपनी मनोरचनाओं पर आधारित निर्णय लेता है तो इस प्रकार के समायोजन को मानसिक मनोरचनाओं पर आधारित समायोजन कहते है।

मानसिक स्वास्थ्य

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है मन का स्वास्थ्य। जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य का अर्थ शरीर के बाहरी और आन्तरिक अंगों के अपनी अपनी जगह उचित होने और उनके उचित रूप से कार्य करने से होता है उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मन के अपनी जगह सही होने व उसके सही रूप में कार्य करने से होता है।[3]

ए.बी.साह का मत है कि 'मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य मानसिक रोग की सिर्फ अनुपस्थिति से नहीं होता है।' आधुनिक नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने मानसिक स्वास्थ्य को समायोजनशीलता की क्षमता की मुख्य कसौटी मानकर इसे परिभाषित किया है जो व्यक्ति के जीवन के सभी मुख्य क्षेत्रों जैसे सांवेगिक, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक आदि में सफलतापूर्वक समायोजन करने में मदद करता है।[4]

कार्ल मेनिंगर के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य अधिकतम खुशी तथा प्रभावशीलता के साथ वातावरण एवं उसके प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के साथ मानव समायोजन है। यह एक संतुलित

---

[3] रघुनाथन, सेल्फ कॉन्फिडेन्स रिट्रीव्ड ऑन, 12 अगस्त, 2009

[4] साह, ए.बी., ए स्टडी ऑन ऑर्गेनाइजेशन क्लाइमेट, गोरखपुर विश्वविद्यालय, 1988

मनोदशा, सतर्क बुद्धि, सामाजिक रूप से माना व्यवहार तथा एक खुशमिजाज बनाए रखने की क्षमता है।[5]

विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले विद्यालयी कारक

1. विद्यालय में कक्षा का वातावरण

2. पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां

3. परीक्षा प्रणाली

4. शिक्षक का व्यवहार

फ्रेंडसन के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य और अधिगम में सफलता का बहुत घनिष्ठ संबंध है।[6]

अधिगम

गुड के अनुसार विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी विषयों में प्राप्त ज्ञान व विकसित कौशल, सामान्यतः शिक्षकों द्वारा विकसित किया जाता है। अधिगम शब्द को प्राप्त संपूर्ण ज्ञान व कौशल के प्रदर्शन की उपलब्धि की प्रवीणता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।[7]

कार्टर के अनुसार अधिगम को विद्यालयी विषय में विकसित कौशल व प्राप्त ज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो सामान्य परीक्षणों में प्राप्त प्राप्तांकों द्वारा दर्शाया जाता है।[8]

---

[5] कार्ल मेनिंगर, ए स्टडी ऑफ पर्ननैलिटी नीड्स, सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड रिस्क टेकिंग, फिफ्थ सर्वे रिसर्च इन एज्यूकेशन, ऑक्सफोर्ड, 1988

[6] फ्रेडसर, मोटिवेशन, सेल्फ कॉन्फिडेन्स एड एक्सेपेक्टेशनस एज प्रिडिक्टर ऑफ द एकेडेमिक परफॉरमेंस एमंग अप हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, 2003

[7] गुड, इन सर्च ऑफ सेल्म इन न्यूयॉर्क, टीचर कॉलेज, 2010

[8] कार्टर, एसेन्शियल ऑफ साइकोलॉजिकल टेस्टिंग, न्यूयॉर्क, हार्पर एण्ड ब्रास, 2002

अधिगम शैक्षणिक प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। जे. हेट्टी ने अधिगम को प्रभावित करने वाले निम्न कारकों की खोज की है।[9]

पारिवारिक कारक – घर का वातावरण, सामाजिक–आर्थिक स्तर, माता–पिता का हस्तक्षेप, माता–पिता की शिक्षा।

विद्यालयी कारक – विद्यालय की विशेषताऐं, विद्यालय प्रक्रिया, विद्यालय का नेतृत्व और पाठ्यक्रम।

कक्षागत प्रक्रिया – शिक्षक की व्यूह रचना, शिक्षक का व्यवहार, विद्यार्थी का व्यवहार, शिक्षण प्रक्रिया।

शिक्षक विशेषता – शिक्षक अनुभव/ज्ञान व प्रशिक्षण, जीवन दर्शन, शिक्षण अभिवृत्ति, व्यवसायिक संतुष्टि, शिक्षण क्षमता

विद्यार्थी विशेषता – पूर्व अनुभव, महत्वाकांक्षाऐं, योग्यता व रूचि, अभिवृत्ति व मूल्य, अध्ययन की आदतें, स्वभाव, विलम्बन व्यवहार, मानसिक स्वास्थ्य।

साहित्य समीक्षा

कविता, प्रकाश एवं रार्बर्ट, जे. (2007) ने "भारत में गैर सामाजिक मिलनसार बच्चों के विद्यालय समायोजन और सांवेगिक सामाजिक विशेषताएँ" शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया। इन्होंने शोध में नई दिल्ली के प्राथमिक विद्यालयों के 929 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थी सामाजिक गैर मिलनसार, आंक्रामक और समाजमिति स्तर के विपरीत पाये गये। शोध के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि सामाजिक गैर मिलनसार विद्यार्थियों में अकेलापन और दबाव के लक्षण पाये गये। ये विद्यार्थी आत्मविश्वास की कमी के शिकार होते है और इस कारण यह शिक्षा, स्वास्थ्य और खेल के स्तर में

---

[9] हेट्टी, जे., ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्फिडेन्स एण्ड लेवल ऑफ ऐस्पीरेशन ऑफ मेन्टली चेलेज्ड एडोल्सेंट, जर्नल ऑफ डिएबिलिटी एउण्ड एम्पेयरमेंट, 2009

भी पिछड़ जाते है। शिक्षकों के अनुसार ये अधिक चिंतित और सहयोगियों में अस्वीकृत थे। लड़कियां लड़कों की तुलना में अधिक सामाजिक, गैर सामाजिक दोनों मिलनसार पाई पाई।[10]

साफिह जबरन–अल–घामरी (2007) ने ''यमन गणराज्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मानसिक योग्यता के साथ आयु, लिंग एवं विद्यालय उपलब्धि के सम्बन्धों का अध्ययन'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि विभिन्न आयु समहू के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एवं आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया। महिला–पुरूष एवं उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया गया। मानसिक योग्यता एवं विद्यालय उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।[11]

श्रीविद्या, वी. (2007) ने ''नवोदय, केन्द्रीय एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वाथ्य एवं समायोजन समस्याएं'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तर कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ से शोध कार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि समायोजन समस्याओं को व्यक्तिगत कारक जैसेः आयु, शिक्षा तंत्र, जन्म का क्रम, विद्यालय की स्थिति, लिंग आदि प्रभावित करते हैं। समायोजन समस्याओं में पारिवारिक कारक, परिवार का प्रकार (संयुक्त एवं एकल) जाति (अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछ़ड़ा वर्ग) धर्म, माता–पिता की शिक्षा, पैतृक व्यवसाय, पारिवारिक आय आदि के आधार तीन प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया। विद्यालयी कारकों के आधार पर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं में सार्थक ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया।

मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में यह पाया गया कि जो पारिवारिक कारक, पारिवारिक आय और विद्यालयी कारक जैसे शिक्षक–विद्यार्थी संबंध विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रभावित करता है। इसमें भी शिक्षक विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को सबसे अधिक प्रभावित करता है।[12]

---

[10] International Journal of Behavioural Development 2007 Vol.-31 No.2 pp-123-132
[11] Safih Jabran Al-Ghamri (2007) 'University of Pune'' Ph.D. Education Thesis Unpublished.
[12] Journal of Agriculture Review/dharwad/2007 pp-105

शर्मा, रजनी (2008) ने 'संस्कारित एवं असंस्कारित परिवारों के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुण, मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि संस्कारित परिवारों के किशोर बालकों में असंस्कारित परिवारों के किशोर बालकों की अपेक्षा 'व्यक्तित्व गुण – सक्रियता की मात्रा उच्च स्तर की पायी गई। संस्कारित एवं असंस्कारित परिवारों के किशोर बालकों में असंस्कारित परिवारों के किशोर बालकों की अपेक्षा व्यक्तित्व गुण – उत्साही की मात्रा अधिक प्राप्त हुई। संस्कारित परिवारों के किशोर बालकों 'व्यक्तित्व गुण–प्रभुत्व वादिता' का स्तर उच्च पाया गया। संस्कारित एवं असंस्कारित परिवारों के किशोर बालकों के व्यक्तित्व गुण विश्वसनीयता की तुलना करने पर संस्कारित परिवार के किशोर बालकों के व्यक्तित्व गुण विश्वसनीयता की तुलना करने पर संस्कारित परिवार के किशोर बालकों में विश्वसनीयता की मात्रा अधिक पायी गई। संस्कारित एवं असंस्कारित परिवार के किशोर बालकों के व्यक्तित्व गुण सम्बन्धी सभी आयामों के योग की तुलना करने पर संस्कारित परिवारों के किशोर बालकों का सम्पूर्ण व्यक्तित्व उच्च स्तर पर पाया गया।[13]

वर्मा, अरूणा (2009) ने ''विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्यों एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर पाठ्यसहगामी क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन'' विषय पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य करके अपने निष्कर्ष में पाया कि सरकारी विद्यालयों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों की अपेक्षा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले छात्रों में व्यक्तित्व गुण–सक्रियता और आत्मविश्वास की मात्रा अधिक है। क्योकि पाठ्यसहगामी क्रियाएं छात्रों की सक्रियता में सहायक होती है। सरकारी विद्यालयों की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाली छात्राओं की अपेक्षा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाली छात्राओं की अपेक्षा पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाली छात्राओं में व्यक्तित्व गुण सक्रियता और आत्मविश्वास की मात्रा अधिक होती है क्योंकि पाठ्यसहगामी क्रियाऐं छात्रों की सक्रियता में सहायक होती है।[14]

---

[13] पी.एच.डी'. शोध प्रबन्ध आई.एस.ए, मान्य विश्वविद्यालय, सरदार शहर।
[14] पी.एच.डी'. शोध प्रबन्ध आई.एस.ए, मान्य विश्वविद्यालय, सरदारशहर।

कौर कमलप्रीत (2012) ने ''विद्यालय जाने वाले विद्यार्थिर्ययों में आत्मविश्वास परिपक्वता एवं समायोजन का अध्ययन'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि लिंग और स्थान का विद्यार्थियों की आत्मविश्वास परिपक्वता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। विद्यालय जाने वाले आत्मविश्वास परिपक्वता और समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। विद्यालय जाने वाले लड़के एवं लड़कियों के आत्मविश्वास परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। विद्यालय जाने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों में शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक समायोजन पाया गया। परिणाम यह भी दर्शाते है कि लड़के लड़कियों की तुलना में अधिक समायोजित होती है।[15]

बिलिग्ंस जोंस, मार्गरेट (2010) ने ''मेघावी और कम मेघावी छात्रों की बौद्धिक योग्यता का आत्मविश्वास, मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ सम्बन्ध'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया। इन्होने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि बुद्धि और आत्मविश्वास, बुद्धि और शैक्षणिक प्रदर्शन एवं शैक्षणिक प्रदर्शन व सामाजिक कुशलता के मध्य महत्वपूर्ण सम्बन्ध एवं समानताऐं पाई गई। बुद्धि और निष्पति, आत्मविश्वास और सामाजिक कुशलता एवं निष्पति एवं शैक्षणिक प्रदशर्न में सकारात्मक सम्बन्ध एवं समानताऐं पाई गई। निष्पति का शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ सबसे मजबूत सम्बन्ध पाया गया। अध्ययन की असमानताओं के अन्तर्गत मेघावी छात्रों के आत्मविश्वास और निष्पति में सम्बन्ध नहीं पाया गया। कम मेघावी छात्रों ने बुद्धि और सामाजिक कुशलता तथा निष्पति व सामाजिक कुशलता में सकारात्मक सम्बन्ध प्रदर्शित किए, जबकि मेघावी छात्रों में ये सम्बन्ध नहीं पाये गये।[16]

वॉल्फन्ग, मेयहर एवं अन्य (2012) ने ''लिंग, व्यावसायिक क्षेत्र और अधिगम का कैरियर सफलता पर प्रभाव : एक आनुभाविक अध्ययन'' शीर्षक पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य पारिवारिक दायित्वों का कैरियर सफलता पर अनुभाविक खोज एवं कैरियर विषय वस्तु के सन्दर्भ में लिंग के प्रभाव का सम्बन्ध स्थापित करना था। शोध में 305 व्यावसायिक स्नातक विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि पारिवारिक दायित्वों और वस्तुनिष्ठ एवं सकारात्मक कैरियर सफलता

[15] Journal of Educationalstudies, Education Department, University of Allhabad, Vol-8 No-1 2012 pp-20-26
[16] Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, January 2010, Vol. 14, No.1, 43-46.

बनाम कार्य केन्द्रित क्षेत्र के साथ नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। पारिवारिक प्रस्थितियों, कैरियर सफलता, के बीच प्रासंगिक कारकों का प्रभाव नहीं पाया गया। अतः लैंगिक भेद ने दोनों को प्रभावित नहीं किया।[17]

ओन्गाए ई. ईम्मुनल और लायनो, एस्ट्रेला (2014) ने ''सेन्ट माईकल कॉलेज के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं अधिगम पर सम्बन्धात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर प्रायोजनात्मक शोधकार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि में विद्यार्थियों की अधिगम शैली, कक्षा–कक्ष प्रबन्ध शैली, शिक्षक सदस्यों द्वारा शिक्षण व्यूह रचना आदि का सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।[18]

सोनी अनीता (2015) ने ''सहशिक्षा एवं बालिका विद्यालयों में ˙ अध्ययनरत छात्राओं की समस्याओं का समायोजन एवं मानसिक स्वास्थ्य अध्ययन'' शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया और शोध के उद्देश्य सहशिक्षा एवं कन्या विद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की समस्याओं का अध्ययन करना एवं सहशिक्षा एवं कन्या विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन करना। इस शोध के निष्कर्ष में पाया कि समायोजन पर आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और न ही वे विद्यालय के प्रकार को प्रभावित करते हैं और व्यक्ति जैसे परिवेश में रहता वैसा ही उसका समायोजन हो जाता है। सभी प्रकार के विद्यालय शैक्षिक दृष्टि से साधन–सुविधाओं से सम्पन्न हैं एवं छात्राओं में भी अध्ययन कार्य के लिए पूर्व की तुलना में परिवर्तन हुआ है। आज लड़कियां घर से दूर रहकार अध्ययन करने लगी हैं जिस कारण समय–समय पर उन्हें अनेक समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि आज बदले परिवेश में कुछ समस्याएं आई भी हैं वे तो इन समस्याओं को गौण कर देती है।[19]

हरेन्द्र सिंह 'चंचल' (2017) ने ''वाराणसी मण्डल के जौनपुर जनपद के स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों की आत्मसम्मान, अधिगम और समायोजन पर गृह पर्यावरण एवं पृथक्करण के प्रभाव का एक अध्ययन'' किया।

[17] Journal of Managerial Psychology, 2012 Vol. 23 Iss: 3, pp.292 -323
[18] SMC Research Journal, 2014 vol-9 pp-109-113
[19] Teacher Today, Director ofsecondary Education, Rajathan Bikaner Jan- March2015 pp-29-33

इसमें पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के अधिगम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण एवं शहरी छात्रों एवं छात्राओं के आत्म सम्मान में सार्थक अन्तर है। ग्रामीण एवं शहरी छात्रों और छात्राओं की समायोजन में सार्थक अन्तर है।[20]

शोध के उद्देश्य

1. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अधिगम के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन, अधिगम, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अधिगम के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

---

[20] हरेन्द्र सिंह 'चंचल' (2017)– वाराणसी मण्डल के जौनपुर जनपद के स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों की आत्मसम्मान, अधिगम, समायोजन पर गृह पर्यावरण एवं पृथक्करण के प्रभाव का एक अध्ययन

4. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्रों के मध्य समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्राओं के मध्य समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्रों के मध्य अधिगम के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्राओं के मध्य अधिगम के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

9. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्रों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

10. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

11. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्रों के मध्य आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

12. आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों के छात्राओं के मध्य आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध के चर

स्वतंत्र चर – आवासीय और गैर आवासीय विद्यालय

आश्रित चर – अधिगम, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास।

शोध क्षेत्र और निदर्शन – शोध हेतु जयपुर जिले के 5 आवासीय और 5 गैर आवासीय विद्यालयों का चयन किया जाएगा।

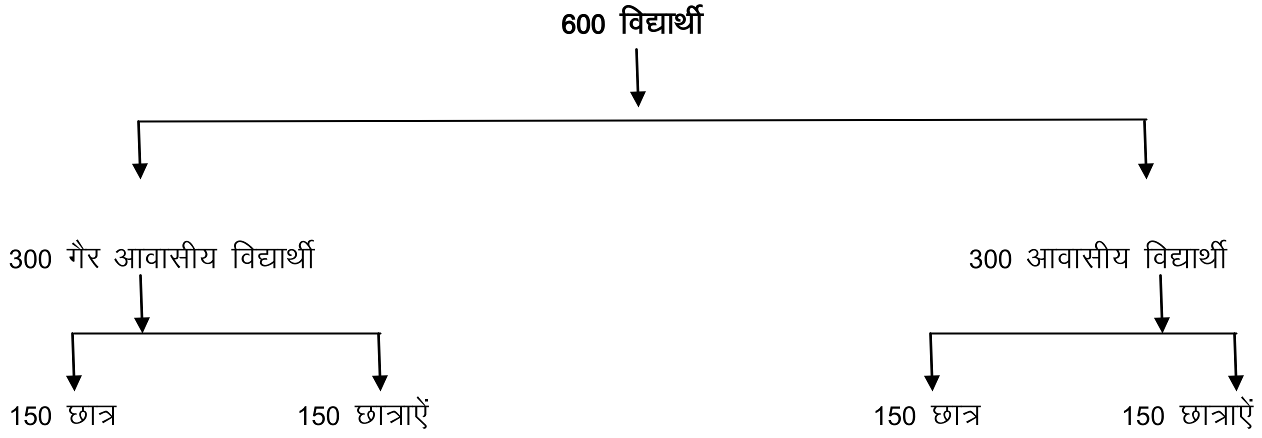

तथ्य संकलन विधियां

प्रस्तुत शोध में आत्मसम्मान, समायोजन, अधिगम, मानसिक स्वास्थ्य की मूल्य मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

शोध सांख्यिकी

मध्यमान
टी टेस्ट
क्रांतिक अनुपात
स्टेण्डर्ड डेविएशन

अध्याय विन्यास

1. अवधारणात्मक परिचय एवं साहित्य समीक्षा
2. शोध पद्धति
3. प्रदत्तों का सारणीयन एवं सांख्यिकी
4. तथ्यों का विश्लेषण
5. निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध का औचित्य – प्रस्तुत शोध में आवासीय और गैर आवासीय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्रमुख चरों यथा समायोजन, अधिगम, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा जिससे यह ज्ञात होगा कि शैक्षणिक प्रक्रिया में किस प्रकार के विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सहायक है और यदि नहीं है तो उनमें किस प्रकार के बाधक तत्व है। भविष्य में यह शोध आवासीय और गैर आवासीय विद्यालयों की शैक्षणिक स्थिति को परिष्कृत करने में सहयोगी सिद्ध होगा।

शोध का परिसीमन – प्रस्तुत शोध जयपुर जिले के आवासीय और गैर आवासीय विद्यार्थियों तक ही सीमित है जिसमें अधिगम, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास के चरों पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. अग्रवाल, मीनू (2001) ''राजस्थान में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व, अनुशासन, आचरण व नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'', राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
2. सिंह, अविनाश (2002) इलाहाबाद के ''किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व उनके मानसिक स्वास्थ्य पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन'', इलाहबाद विश्वविद्यालय
3. ए.एन. प्रसाद (2003) ''लिंग भेद के आधार पर विद्यालय शिक्षकों के समायोजन एवं दुश्चिन्ता (तनाव) पर अधिगम और समायोजन का प्रभाव'' देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
4. बार आर. (2000) ''इमोशनल एण्ड सोशल इंटेलीजेंस इन्साइट फ्राम द इमोशनल क्वरेन्ट इवेन्ट्री।'' International Journal of Yoga and Allied Sciences, Delhi
5. बन्डा एवं कुर्कड़ (2012) ''स्वास्थ्य पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन'', कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय
6. बारबरा स्टोलेर मिलर, (1996), सेल्फ कॉन्फिडेन्स, कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी
7. कास्टा (2001) ''दुश्चिन्ता निदान'', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
8. चिन्ताहरण बेताल (1999) ने ''Effect of Preksha Meditation on Drug Abuses's Personality'' International Journal of Yoga and Allied Sciences, Delhi
9. डेविड शिपरों एवं इयान ए. कुक, (2003) ''निराशा पर आत्मविश्वास का प्रभाव'', कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय
10. डी.एन. (2003) ''शैक्षिक दबाव एवं दुश्चिन्ता के साथ व्यापन'',राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
11. दास के. (1975) ''सांख्य योग व श्रीमदभागवद गीता में व्यक्तित्व का प्रत्यय'', देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
12. दोसी, साधक हसमुख (1986) ''प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं जीवन विज्ञान'', जैन विश्वभारती लाडनूं
13. गोचर, बद्रीलाल (2003) ''विभिन्न प्रकार के समायोजन कार्यक्रमों का किशोर छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व, मानसिक स्वास्थ्य तथा गामक योग्यताओं पर प्रभाव का अध्ययन।'', राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसेज, जयपुर।
14. गुप्ता, रंजना (2009) ''महाविद्यालय छात्राओं की मनःस्तापी क्रियाएं, मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन पर प्रेक्षाध्यान, योग क्रियाओं का प्रभाव'',वनस्थली विद्यापीठ, निवाई
15. गैन्टेनो (2008) ''उदास एवं अधिक तनाव ग्रसित बालकों पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन'',हैल्थ एण्ड फिटनेस ऐसोसिएशन, अमेरिका
16. गोलकार (2005) ''दैनिक जीवन में आत्मविश्वास का तनाव पर प्रभाव का एक अध्ययन'', मेडिसिन नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ हैल्थ, यूएसए
17. गौड़ एवं शर्मा (2001) ''कैदियों के व्यक्तित्व कारकों एवं मनोकायिक स्वास्थ्य पर प्रेक्षाध्यान का प्रभाव'',वनस्थली विद्यापीठ, निवाई
18. गौतम चन्द्र (1991) ''आचार्य तुलसी मानसिक स्वास्थ्य सम्प्रत्यय का अध्ययन'' देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
19. गैनानी, टी.सी. (1984) ''फ्रस्टेशन, रिकेशन एज फंक्शन्स ऑफ एचीवमेंट मोटिवेशन एण्ड एंग्जाइटी एट डिफरेन्ट एज लेवल्स'', साइकोलॉजीकल रिव्यू, लंदन।
20. जबौलट (2011) ''विभिन्न संकायों में पढ़ने वाले बालकों के स्पैक्टम (वर्णक्रम) विकास पर योग के प्रभाव का अध्ययन'',हैल्थ एण्ड फिटनेस इंस्टिट्यूट, अमेरिका
21. जेन्सन एण्ड कैनी (2012) ''मानसिक स्वास्थ्य एवं अधिगम कठिनाइयों पर प्रभाव का अध्ययन'',हैल्थ एण्ड फिटनेस इंस्टिट्यूट, अमेरिका
22. जैन, शशी (1991) ''आचार्य तुलसी जीवन–विज्ञान एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्प्रत्यय की शैक्षिक उपादेयता'', जैन श्वेताम्बर तेरापंथी, दिल्ली।
23. जैन, मुमुक्षु संतोष (1987) ''मानसिक स्वास्थ्य एवं प्रेक्षाध्यान'', जैन विश्वभारती लाडनूं
24. जैन, राजीव एवं त्रिलोक (2018), अधिगम, मंजूला हाउस, भोपाल

25. ली लीपटोन (2008) समायोजन और आत्मप्रेरक कार्यक्रमों का तनाव पर प्रभाव'',हैल्थ एण्ड फिटनेस ऐसोसिएशन, अमेरिका
26. मंजूप्रज्ञा (1987–88) ''शरीर विज्ञान व व्यायाम'', जैन विश्वभारती लाडनूं
27. मूलर, मैक्स, (1899), सिक्स सिस्टम्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी : सामाख्या योग, सुशील पब्लिकेशन, कलकता
28. माली, राजकुमार (2009) ''ध्यान एवं प्राणायाम का बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन'', देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
29. मुनि किशन लाल एवं सुराणा, शुभकरण (2011), जीवन विज्ञान, जीव विज्ञान अकादमी, जैन विश्वभारती, लाडनूं
30. मित्रा, धर्म श्री, (2003), आत्मविश्वास और अधिगम का संबंध, न्यू वर्ल्ड लाइब्रेरी, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया
31. माथुर एवं शर्मा (2004) ''जीवन विज्ञान द्वारा मूल्य निर्माण'', दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
32. ओम (1988) ''शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तिगत उपलब्धि भावात्मक निपुणता के सम्बन्ध का लिंगगत संदर्भ में अध्ययन।'', राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
33. पीक (2005) ''पहली, दूसरी और तीसरी कक्षाओं के बालकों समायोजन के प्रभाव का एक अध्ययन'', देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
34. पतंजलि, (2001) पंतजलि योग सूत्र, योग हीलिंग आर्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन
35. आर.ए. शर्मा (2015) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर.एल.बुक डिपो, मेरठ
36. राघवन (2002) "Effect of Science of Living practices on midle level school students.", International Journal of Yoga and Allied Sciences, Delhi
37. राय पारसनाथ (2007) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
38. राधाकृष्णन् (1978) भारतीय दर्शन, जार्ज एलन एण्ड उइन पब्लिकेशन, लंदन
39. सुमन (2005) ''आत्मविश्वास का शरीर क्रिया वैज्ञानिक आधार'',जैन श्वेताम्बर तेरापंथी संस्था, दिल्ली
40. शर्मा, दुर्गेश (2009–10) ''समायोजन व जीवन विज्ञान को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाये जाने के प्रति प्रधानाध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन'',वनस्थली विद्यापीठ, निवाइ
41. शर्मा, मनदीप (2010) ''वयस्कों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य सह सम्बन्धता के रूप में व्यक्तित्व के कारक का अध्ययन'',राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
42. समणी ऋतु प्रज्ञा (2007), आत्मविश्वास एवं जीवन मूल्य, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं
43. सरीन एवं सरीन, (2008) शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगर
44. साध्वी शुभ्रयशा (1984/86) ''भावात्मक विकास का नया आयाम जीवन विज्ञान'', जैन विश्वभारती लाडनूं
45. सोनी, सुधा (1986) ''शिक्षा की समस्याएं एवं मानसिक स्वास्थ्य'', जैन विश्वभारती लाडनूं
46. शर्मा, डी.एल. (1993) ''अधिगम एवं जीवन विज्ञान प्रशिक्षण'',राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
47. सरस्वती, सत्यानन्द, (2002), आत्मविश्वास और अधिगम, प्रिन्सटन हॉल पब्लिकेशन, लंदन
48. तलेसरा, हेमलता (2002 व 2003) ''समायोजन द्वारा मूल्यों का निर्माण'',के.बी.देव महाविद्यालय, मेहसाना, गुजरात
49. तिवारी, सच्चिदानन्द (2003–2004) ''विभिन्न भौगोलिक पर्यावरण में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।'', सीआईई, दिल्ली विश्वविद्यालय
50. टर्नर (2013) ''आत्मविश्वास का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन''ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, लंदन